मानस कौमुदी

फादर डॉ. कामिल बुल्के

डॉ. दिनेश्वर प्रसाद

मानस कौमुदी

फादर डॉ. कामिल बुल्के

डॉ. दिनेश्वर प्रसाद

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अप्रैल, 2025

© डॉ. दिनेश्वर प्रसाद

मानस पाठकों को

भए, जे अहहिं, जे होइहहिं आगें

अनुक्रम

प्राक्कथन	4
भूमिका	8
मानस का संक्षिप्त व्याकरण	64
मानस-कौमुदी की विषय-सूची	119
परिशिष्ट	587

प्राक्कथन

'मानस-कौमुदी' रामचरितमानस के चुने हुए डेढ़ सौ प्रसंगों का संकलन है। इन प्रसंगों में मानस के सबसे कवित्वपूर्ण भागों में से अधिकतम का समावेश हो गया है तथा प्रायः वे सब अंश आ गये हैं, जो मानसकार की विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रसंगों के मूल क्रम में कहीं कोई परिवर्तन नहीं किया गया है और उनसे सम्बद्ध जो बन्द रखे गये हैं, वे थोड़े-से उदाहरणों को छोड़ कर, पूरे हैं। कथा के प्रवाह को बनाये रखने के लिए छूटे हुए अंशों की विषयवस्तु की संक्षिप्त सूचना कोष्ठकों में गद्य में दे दी गयी है। इससे पाठकों को मानस की पूरी वस्तु के साथ उसके सर्वोत्तम अंशों की जानकारी उसके प्रायः एक-तिहाई आकार के प्रस्तुत संकलन से हो जायेगी।

हम यह जानते हैं कि किसी रचना का संक्षेप उसके पूर्ण रूप का स्थान नहीं सकता, अतएव उस दृष्टिकोण का उल्लेख आवश्यक है, जिससे प्रेरित हो कर हमने मानस को 'मानस-कौमुदी' का रूप दिया है। हमने अनुभव किया है कि मानस की लोकप्रियता आधुनिक दृष्टि से शिक्षित कहे जाने वाले लोगों के बीच घटती गयी है। साहित्य विषय का अध्ययन करने वाले लोगों में भी ऐसे व्यक्ति कम हैं, जिन्होंने सम्पूर्ण मानस पढ़ा है। जो व्यक्ति इसे पढ़ना चाहते हैं, उन्हें पूरी पुस्तक पढ़ने का साहस नहीं होता। रचना का विस्तार उनके मार्ग में बाधक प्रमाणित होता है। इसकी लोकप्रियता

की एक अन्य बाधा -सम्भवतः निर्णयात्मक बाधा-इसकी भाषा है। आज के हिन्दी पाठकों के लिए हिन्दी का प्रधान अर्थ खड़ी बोली है । अतएव, जो अवधी या ब्रज क्षेत्र के नहीं है, इन भाषाओं में लिखा हुआ साहित्य उनकी समझ के दायरे से बाहर पड़ता जा रहा है। तीसरा बावक कारण यह धारणा है कि मानस मध्ययुगीन विचारधारा का प्रतिनिधित्व करने वाली, अतः अनाधुनिक रचना है, जिसे पढ़े बिना भी काम चल सकता है। ऐसा समझा जाने लगा है कि वर्णाश्रम धर्म, नारी ज़िन्दा आदि मूल्यहीन विश्वासों के सिवा इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे आज का मनुष्य अपने लिए प्रेरणा समझे ।

हमने मानस-कौमुदी के माध्यम से इन सभी बाधाओं को यथासम्भव दूर करने का प्रयत्न किया है। हमने न केवल मानस को एक-तिहाई आकार में प्रस्तुत किया है, वरन् आवश्यक सीमा तक विराम, योजक और उद्धरण चिह्नों का समावेश कर मूल पंक्तियों के अर्थ को सरल रूप में ग्राह्य बनाने का भी किया है। हमने पाद-टिप्पणियों में बहुत-से कठिन शब्दों का अर्थ दे दिया है और रचना की भाषा के स्वरूप को स्पष्ट करने हेतु उसका संक्षिप्त व्याकरण भी प्रस्तुत किया है। हमारा विश्वास है कि व्याकरण में दी गयी सूचनाओं की जानकारी के बाद मानस की भाषा की पहचान कठिन नहीं रह जायेगी। हमने भूमिका में मानस से सम्बद्ध आवश्यक प्रसंगों का उल्लेख किया है, जिससे

पाठक इस महान् कृति को सही परिप्रेक्ष्य में रख कर देख सकेंगे और यह अनुभव कर सकेंगे कि यह एक निरन्तर सार्थक रचना है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि 'मानस-कौमुदी' भारत तथा बाहर के विश्व-विद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए भी उपयोगी प्रमाणित होगी। विश्वविद्यालयों की अवर-स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं में मानस के किसी विशेष काण्ड- सामान्यतः बालकाण्ड या अयोध्याकाण्ड का अध्यापन होता है और कभी-कभी बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड और उत्तरकाण्ड के चुने हुए प्रसंगों का भी। इससे छात्रों के मन में न तो मानस की पूरी विषयवस्तु की कोई स्पष्ट धारणा बन पाती है और न इसके कवित्व की विविधता का बोध उत्पन्न होता है। 'मानस कौमुदी' की विशेषता यह है कि इसमें मानस के लगभग अयोध्याकाण्ड-जैसे आकार में दोनों अभावों की पूर्ति हो जाती है।

हम यह आशा करते हैं कि 'मानस-कौमुदी' न केवल छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी, वरन् इससे आज का शिक्षित समुदाय मात्र लाभान्वित होगा। हमारा मुख्य उद्देश्य आधुनिक मानस के साथ मानस के टूटते हुए सम्बन्ध को फिर से जोड़ना है और उसमें यह बोध उत्पन्न करना है कि इसका कवित्व इतनी उच्च कोटि का है कि वह किसी भी युग में बासी नहीं पड़ेगा तथा इसकी जीवनदृष्टि, अपनी युगीन सीमाओं के बावजूद, इतनी मूल्यवान् है कि वह हमें आज भी प्रेरित कर सकती है।